[Shrimati Jyotsna Chandra]

been spent on the construction of buildings and now it has been shifted to another site where fresh construction is to be undertaken. Thus a colossal wastage of money has already occurred.

I would also like to bring to the notice of Government that some waste lands are lying in tea garden areas or in other factory areas which could easily be brought under cultivation of foodgrains or cash crops.

Mr. Deputy-Speaker: The hon. Member might continue tomorrow. We have to take up the half-hour discussion now.

---

17 hrs.

*BORDER ROADS

डा० राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद): मैं कोशिश करूंगा कि ऐसी कोई बात न कहूं कि जिससे चाहे प्रशासन और दिल्ली की सरकार की गलती साबित हो, लेकिन परदेश को फायदा हो जाता हो। जिस मसले पर हम लोग बहस कर रहे हैं वह कितना महत्वपूर्ण है यह एक ही बात से आप पता लगायें कि केवल राजस्थान में इस समय इतनी सीमा सड़कों के लिए रुपया तय हुआ है कि करीब 80 करोड़ कुल खर्चा होगा जिस में से 30 करोड़ तय किया जा चुका है। यानी अनुदान के रूप में देने का निश्चय हो चुका है। लेकिन मामला कितना गड़बड़ है वह इसी से आप अन्दाज लगायें कि इस में से 1 करोड़ 16 लाख खर्च करके जो कि 26–6–64 को तय हुआ था, सड़क बननी थी लेकिन एक तरफ तो राजस्थान की सरकार ने कई महीने खोये क्योंकि वहां के एक मंत्री योजना मंत्री और दूसरे मंत्री सार्वजनिक निर्माण मंत्री में मतभेद हो गया कि कौन एग्जीक्यूटिव इंजीनियर बने, तीन महीने इसमें खोये फिर उसके बाद राजस्थान की सरकार के खुद के नोट से मैं बता रहा हूं कि उन्होंने यातायात मंत्रालय दिल्ली वालों के पास चार बार एक सड़क की योजना भेजी लेकिन पैसा नहीं दिया गया और उनकी रपट में यह लिखा है कि दो बार वे योजनाय मंत्रालय से खो गई। यह राजस्थान सरकार के एक नोट में है। तो राजस्थान सरकार और दिल्ली सरकार दोनों ने कितनी लापरवाही दिखलायी यह मैं ने आपको इस उदाहरण से बताया। मामला जैसा है वह कुछ खुद की जानकारी और कुछ और जरियों से मैं बताता हूं कि एक बार मैं भारत पाकिस्तान की जैसलमेर वाली सीमा के करीब करीब आखिर तक चला गया था वहां मुझ से यह कहा गया कि अगर तुम पाकिस्तान जाना चाहते हो तो हम तुमको ले जा सकते हैं और फिर यहीं वापस पहुंचा देंगे और फिर आंसू का तला आखिरी जगह, जहां मैं गया था वहां एक अजीब समाज मिला। मैं ने सोचा कि शायद यह चार हजार वर्ष पहले की पशु-पालन सभ्यता जम गई है जब कि दिन में गांव लगते थे और रात को गांव उजड़ जाते थे। उसी तरह से, और मैं गया था तो लोहे की सड़क मेरे साथ थी। उस वक्त मैं ने रेगिस्तान में मौत की बेचैनी को एक क्षण के लिए खुद अनुभव किया था। तो यह वह इलाका है और फिर राजस्थान का ही नहीं, उसी तरह से मैं भुज से कच्छ के रन तक की एक बात बतायें देता हूं वहां एक बांध बनाया गया सिंचाई और बिजली के लिए। वहां सड़कें भी हैं। लेकिन क्योंकि योजना के गैर संयोजन से नदी का एक पुल नहीं बना इसलिए न सिंचाई का फायदा हो रहा है और स्वयं सेना को करीब 12 मील घूम कर के जाना पड़ता है। उसी तरह से मैं आपको उर्वसीम का एक

---

*Half-an-Hour Discussion.

उदाहरण देता हूं जहां जाने के कारण मैं दो बार गिरफ्तार किया गया था और मैं ही नहीं, हमारे सब भारतवासी, तब मैंने कहा था कि देखो, दक्षिण में देशवासियों को जो निहत्थे हैं अपनी पुलिस के द्वारा गिरफ्तार करते हो तो . . .

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) : मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। इतने बड़े अच्छे वक्ता बोल रहे हैं डाक्टर लोहिया और सदन में गणपूर्ति नहीं है, गणपूर्ति करवाइए।

उपाध्यक्ष महोदय : घंटी बज रही है . . . . . अब गणपूर्ति हो गई है, माननीय सदस्य अपना भाषण जारी रखें।

डा० राम मनोहर लोहिया : तो वहां एक विचित्र बात यह रही कि उर्वसीयां में जानबूझकर के और कोशिश करके उस सभ्यता को बनाये रखा गया जो करीब 2 हजार वर्ष पहले जम गई थी। नतीजा यह हुआ कि सड़कें वगैरह तो रही ही नहीं, लेकिन लोग भी आधुनिक नहीं बन पाये। जब हम ने वलांग की लड़ाई खोई तो उसका मुख्य कारण यही था कि जिसको हम सड़क नहीं समझते थे, उसको चीनियों ने सड़क की तरह इस्तेमाल करके वलांग के ऊपर कब्जा किया था। तो जिस इलाके की मैं आपसे चर्चा कर रहा हूं वह करीब करीब उसी तरह से है जैसे दो नदियों के मिलने पर संगम होता है और उससे रोमांच होता है और वह तीर्थ स्थान बनता है। मेरी निगाहों में और मैं समझता हूं इतिहास के लिए भी जहां दो देशों की सीमायें मिलती हैं वहां उसी तरह का या तो तीर्थ स्थान बनता है या युद्ध-स्थल ही बना करता है। लेकिन भारत सरकार ने इस रोमांचकारी चीज को पहचाना नहीं। न तो उसे तीर्थ स्थान बनाया न उसके लिए युद्धस्थल बनने का जो खतरा था उसका मुकाबला या सामना किया और उसको बिलकुल वीरान, उजाड़, जगत रेगिस्तान की अवस्था में छोड़ा जिसमें वह था। वहां के लोग इस लायक नहीं बनाये गये कि परदेशियों के साथ प्रेम का अथवा जरूरत पड़े तो लड़ाई का सम्बन्ध कर सकें। मैं लड़ाई पसन्द नहीं करता, मुझे तो तीर्थ स्थान पसन्द है, उसे तीर्थ स्थान बनाते तो बड़ा अच्छा होता।

इसी तरह से मैं आपको राजस्थान का ही एक किस्सा और बताए देता हूं कि उन्होंने पिछली योजना में सड़कों पर कुल 22 करोड़ रुपया खर्च किया। आखिर को जो, सीमा के इलाके हैं वे भी तो राजस्थान के ही नीचे आते हैं। मान लो थोड़ी देर के लिए कि श्री राजबहादुर ने उनकी कोई मदद नहीं की, मैं इस वक्त श्री राजबहादुर की तरफ से बोल रहा हूं

परिवहन मंत्री (श्री राज बहादुर) : आपको धन्यवाद।

डा० राम मनोहर लोहिया : इस 22 करोड़ में से आखिर उन्हें कुछ रुपया तो सीमा की सड़कों पर खर्च करना चाहिए था। तो उन्होंने बिलकुल नहीं किया। अपने प्रदेश के लोगों के हित में जो काम करना चाहिए था, नहीं किया। मैं नमूने के तौर पर कुछ जगहें गिनाता हूं, ऐसी और पचासों जगहें होंगी जैसे बांधा खोईवाला सागर और गोटारू जहां पांच महीने से कुएं यानी ट्यूबवेल लगे हुए हैं लेकिन इंजिन नहीं लगने के कारण उस पानी का कोई इस्तेमाल नहीं हो पाता और यह आप जानते ही हैं कि पानी चाहिए सिचाई के लिए भी, सड़क बनाने वाले मजदूर और सेना के पीने के लिए भी और बिजली बहुत जरूरी है उस प्रदेश की रक्षा करने के लिए भी। और वहां मैं आपको बताऊं कि राजस्थान में चान्दा, जैसलमेर के इलाके में ट्यूबवेल बने थे, तब उसका जिक्र कुछ इस तरह से हुआ था कि जैसे कोई बड़ी चमत्कारी चीज है। उसके अलावा पानी बाबा भी उस वक्त हुए थे। तो बार बार कोई न कोई एक अद्भुत और नाटकीय चीज को लेकर सरकार आ जाती है लेकिन परिणाम उसका कुछ नहीं निकला

[डा० राम मनोहर लोहिया]

करता। तो मैं एक तर्क यह भी दूंगा कि अखबारी ध्यान के लिए कभी तो पानी बाबा और कभी चांदा का ट्यूबवेल और कभी लूनी नदी के जमीन के नीचे के पानी की चर्चा करते रह जाओ और कोई नतीजा न निकालो, यह चीज अच्छी नहीं होती, और परिणाम क्या हुआ वह आप जानते हो।

यों युद्ध विराम होने के बाद कहा यह गया था राजस्थान के मुख्य मंत्री की तरफ से, और उसके साथ साथ हिन्दुस्तान के स्थल सेनापति की तरफ से, कि जो जमीनें पाकिस्तानियों के कब्जे में हैं वे 200 या 250 वर्ग मील से ज्यादा नहीं होंगी। लेकिन अब अखबारों में रोज रोज कुछ इसी सरकार के द्वारा खबर निकलती है, फलां चौकी पाकिस्तानियों से वापस ले लो, फलां चौकी पाकिस्तानियों से वापस ले लो, जो उन्होंने युद्ध-विराम के बाद धोखे से हिन्दुस्तान से ली है।

मैं इस समय इस बहस में नहीं पड़ता। मैं माने लेता हूं कि पाकिस्तानियों ने ये चौकियां धोखे से ली। फिर भी कुछ और चौकियां पाकिस्तानियों के पास हैं, और कितनी लम्बी सीमा है यह इसी से अनुमान लगा लें कि राजस्थान तथा पाकिस्तान की सीमा कच्छ के रण तक करीब 670 मील लम्बी है। अगर कुछ चौकियां उनके पास होंगी तो सैकड़ों वर्ग मील जमीन उनके कब्जे में होगी।

ऐसी स्थिति में जब कि लड़ाई में इतने निकम्मे हम लोग साबित हुए, तो देखना पड़ेगा कि इन सड़कों के न रहने का कितना जबरदस्त असर पड़ा। और अब मैं खास तौर से एक सड़क की बात कहूंगा जो कि छम्ब-जोरियां-अखनूर के इलाके को लेकर के है: बड़ी महत्वपूर्ण है। हो सकता है कि नाम के बोलने में कहीं कोई अक्षर मुझ से गड़बड़ हो जाए, क्योंकि आखिर मुझ जैसे आदमी को ये बातें मुश्किल से मिला करती हैं। यही क्या कम है कि मिल जाती है। फिर भी मैं आपको बताऊं कि 1952 से 1955 में हमारे जो इस काम के लिए सरकारी अंग होते है उन्होंने कह दिया था कि पाकिस्तान जब कभी काश्मीर को आखिरी तौर पर लेना चाहेगा तो छम्ब-जोरियां-अखनूर पर हमला करेगा। यह बात दस पन्द्रह बरस पहले ही भारत के उन सरकारी महकमों को, जिन से मतलब है, मालूम थी। और तब एक सड़क बनवाने की बात हुई थी और वह थी मधवापुर सड़क। हो सकता है कि नाम के बोलने में मुझ से कुछ इधर उधर की बात हो जाती हो, तो मंत्री महोदय ऐसा न करना कि उसका जिक्र न करो मैं अपनी तरफ से बहुत सी चीजें रोक रहा हूं। ऐसा न हो कि आप कोई और नाम बना दो। तो वह सड़क नहीं बनी। उसका सम्बन्ध भारत और श्रीनगर अथवा उड़ी से नहीं है, उसका सम्बन्ध केवल छम्ब-जोरियां के इलाके से है। इस सड़क का यह महत्व होता कि जब पाकिस्तानी लोग आते तो इस इलाके की अच्छी तरह से रक्षा की जा सकती और अपनी पल्टनों को पाकिस्तानी पल्टनों को घेर लेने के लिए पीछे से ले जाया जा सकता। यह सड़क दस बरस पहले बन जानी चाहिए थी। लेकिन वह सड़क नहीं बनी, जिसका नतीजा यह हुआ कि जो भारत की जबरदस्त पल्टनी कार्रवाई होनी चाहिए थी, कि या तो छम्ब-जोरियां में आए हुए पाकिस्तान के 15-20 हजार सैनिक और उनकी बख्तर-बन्द गाड़ियों को चारों तरफ से घेर करके खत्म कर देते या गिरफ्तार करते, और नहीं तो लाहौर और स्यालकोट की तरफ जाकर उसको अपने कब्जे में लेते, वह नहीं हो पायी। इस सड़क के न बनने से नतीजा हुआ है कि दोनों में से जो जरूरी काम थे, कोई भी नहीं हो पाया, और जैसे किसी आदमी की आंखों में पट्टी बांध दी जाए और वह चारों

तरफ हाथ फेंकने लगे, उसी तरह से कभी राजस्थान की तरफ कभी सिन्ध की तरफ, कभी कुछ कभी कुछ कार्रवाई की, जो हमारे लिए खतरनाक थी ।

उपाध्यक्ष महोदय : अब आप खत्म करें ।

डा० राम मनोहर लोहिया : क्या आप बादमें भी बोलने देंगे ?

उपाध्यक्ष महोदय : और स्पीचेज नहीं होंगी ।

डा० राम मनोहर लोहिया : आप आखिर में नहीं कहने देंगे तो मैं अभी कहे देता हूं ।

तो इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि जिन प्रदेशों का मैं ने जिक्र किया उनमें मंत्री लोग या मुख्य मंत्री लोग ऐसे किस्म के हों कि जिनको तस्कर व्यापार में दिलचस्पी हो । मैं ने बताया कि जहां दो देशों की सीमायें मिलती हैं वहां पर

एक माननीय सदस्य : उनके नाम . . .

डा० राम मनोहर लोहिया : मुझे नामों से मतलब नहीं । मेरा कहना है कि अगर ये सड़कें बन जातीं तो तस्करी खत्म हो जाती । इसलिए इन दो सीमाओं के मिलन की जगह को वीरान बना के रखा गया ताकि तस्करी व्यापार चलता रहे, यह भी एक कारण हो सकता है इस लोगों की सुरक्षा ठीक तरह से न होने का ।

इसलिए इस वक्त मेरा यह निश्चित आरोप है आपके ऊपर कि भारत की सरकार ने और उन चार पांच प्रदेशों की सरकारों ने जिनके मैं ने नाम गिनाये, इस मामले में बिल्कुल लापरवाही की है । न तो उन स्थानों को तीर्थ स्थान बनाया और न तो उनको पर्यटनों के लिए योग्य बनाया, और जो दो देशों की सीमाओं पर कार्रवाई होनी चाहिए थी वह न कर के जान बूझ कर के उनको दो हजार और चार हजार बरस पहले की सभ्यता में जकड़ करके, जमा करके रखा ।

Shri C. K. Bhattacharyya (Raiganj). Will the hon. Minister kindly state whether proper steps have been taken for building and protecting border roads on all points of contact between India and Pakistan, on both sides

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : उपाध्यक्ष महोदय, यह सीमावर्ती सड़कों का सवाल डा० लोहिया जी ने उठाया है । लेकिन इस से सम्बन्ध दूसरे दो मंत्रालयों का भी है, एक रेलवे मंत्रालय और दूसरा सुरक्षा मंत्रालय । मेरा खयाल था कि यहां पर इस समय रेल मंत्री और सुरक्षा मंत्री भी मौजूद रहेंगे क्योंकि यातायात का और सड़कों के निर्माण का जो कार्य होता है वह इन तीनों को मिला कर करना चाहिए था ।

तो कच्छ से ले कर पंजाब तक सरकार रेल और सड़क के निर्माण में बिल्कुल असफल रही है । एक समानान्तर सड़क उन को बनानी चाहिए थी और उस समानान्तर सड़क और सरहद का सम्बन्ध जोड़ने के लिये कई सड़कों का निर्माण करना चाहिए था । तो सब मिला कर सरकार ने हवाई अड्डों का निर्माण, सड़कों के निर्माण और जैसलमेर आदि की तरफ रेल का निर्माण नहीं किया, इस का कारण क्या है और भविष्य में क्या इस तरह की मिली जुली कोई ठोस योजना बनायी जाएगी ।

Shri S. C. Samanta (Tamluk): In reply to the question referred to, it is said that Rs. 1 lakh for Gujarat area and another Rs. 1 lakh for Rajasthan were granted. I would like to know whether the amount has been spent and whether the assistance of the Defence Department or the State Government was solicited

[Shri S. C. Samanta]

for constructing or building those border roads connecting different military posts?

श्री राज बहादुर : उपाध्यक्ष महोदय, मुझे आप क्षमा करेंगे यदि मैं हिन्दी में बोलूं ।

लोहिया जी जैसी हिन्दी में बोले मैं वैसी हिन्दी तो नहीं बोल सकता, न उन की जैसी भाषा और न उन के जैसे विचार । किन्तु उन्होंने कुछ बातें रखी हैं, कुछ आरोप लगाए हैं, कुछ सन्देह प्रकट किए हैं . . . .

पुनर्वास मंत्री (श्री त्यागी) : कटुता से मत बोलिए ।

श्री राज बहादुर : मैं मिठास से बोलूंगा । मैं तो ब्रज का रहने वाला हूं और ब्रज का मिठास और माधुर्य तो सारे देश में विख्यात है ।

एक माननीय सदस्य : उन की खड़ी हिन्दी है ।

श्री राज बहादुर : तो लेटी हुई मेरी भी नहीं है ।

उन ने अपनी तरफ से दो तीन बातें कही हैं । जिन का सीधा सम्बन्ध तो उन प्रश्नों से नहीं है जिन का उन्होंने लिख कर मुझे नोटिस दिया था । पर मेरा यह कर्तव्य हो जाता है कि जितनी बातें उन ने सदन में कही हैं उन का उत्तर दूं ।

उनने कहा कि जहां दो राज्यों या देशों की सीमायें मिलती हैं या तो वह स्थान तीर्थस्थान बन जाता है या वह युद्धस्थली हो कर रहता है । न हम ने पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की सीमाओं को तीर्थ स्थान बनाने की चेष्टा की और न हम ने युद्ध स्थली बन जाएगी किसी दिन इस आशंका, इस भय, इस सन्देह या इस भवितव्यता का कोई बन्दोबस्त या व्यवस्था की ।

मेरी तुच्छ मति में जहां पाकिस्तानी और हिन्दुस्तान की सीमायें मिली हैं, वहां अब तक चाहे तीर्थ-स्थान न बना हो, किन्तु उन सीमाओं को पार कर के जब पाकिस्तानी हमलावरों ने हमारे देश पर अधिकार जमाना चाहा, हमें अपमानित करना चाहा, तो उन सीमाओं पर हमारे जवानों ने जहां जहां रक्तदान दिया, अपने प्राणों की बलि दी, जहां जहां उन का खून गिरा, जहां रक्त गिरा, जहां जहां उन्होंने वीरगति को प्राप्त किया, वह एक एक इंच भूमि सचमुच तीर्थस्थान बन गई है । मैं समझता हूं कि डा० लोहिया भी इस बात को मानेंगे ।

युद्ध की तैयारी, युद्धस्थल और युद्ध के बारे में क्या नीति होनी चाहिए, क्या व्यवस्था होनी चाहिये, इस का सम्बन्ध मेरे मंत्रालय से तो नहीं है ।

श्री किशन पटनायक (सम्बलपुर) तो फिर दूसरे मंत्री क्यों नहीं आए ?

श्री राज बहादुर : उन का सम्बन्ध सुरक्षा मंत्रालय से है । मैं जानता हूं कि डा० लोहिया भी इस बात को स्वीकार करते होंगे कि युद्ध-नीतियां भी समय समय पर बदलती रहती हैं । हमें किस स्थान पर सड़कें चाहिए, किस स्थान पर नहीं चाहिए, यह भी एक गम्भीर विचारणीय तथ्य है, जो हमारे जनरलों और फौजी अधिकारियों को अथवा उन को, जो हमारी सुरक्षा की नीति का निर्धारण करने वाले हैं, सोचना पड़ता है । हम जानते हैं कि कच्छ से ले कर बाड़मेर तक और बाड़मेर से जैसलमेर, बीकानेर और गंगानगर तक एक भारी रेगिस्तान है । अक्सर उस रेगिस्तान के बारे में यह विचार भी किया जाता है कि ऐसी भूमि पर से शायद आक्रमण नहीं हो सकता है । और अगर शत्रु आक्रमण करे, तो कम्युनिकेशन की लाइन इतनी लम्बी हो जाती है कि उस को यहां आक्रमण करने की सुविधा नहीं हो सकती

है। इसलिए जहां सड़कें न होना एक तरह सुरक्षा की बात हो जाता है, वहां सड़कों का होना खतरा भी बन सकता है। इस के बारे में समय समय पर विचार बदलते रहते हैं। लेकिन यह एक निश्चित बात है—कोई चाहे इस में मतभेद भी रख सकता है—कि जिस प्रकार का रेगिस्तान राजस्थान की सीमा पर विशेषतया बाड़मेर की सीमा पर . . .

श्री हुकम चन्द कछवाय : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। मंत्री जी का वक्तव्य हो रहा है और सदन में गणपूर्ति नहीं है।

उपाध्यक्ष महोदय : घंटी बजाई जा रही है—अब कोरम है। माननीय मंत्री अपना भाषण जारी रखें।

श्री राज बहादुर : मैं इतना जानता हूं कि जहां सड़कें बनाने की बात आई है . . .

श्री हुकम चन्द कछवाय : उपाध्यक्ष महोदय, क्या कोरम हो गया है ?

Shri Himmatsinhji (Kutch): It has been seen that Patton tanks run very well in the sands of the Rajasthan desert as well as in the Rann of Kutch.

Shri Raj Bahadur: In that context, the question of constructing a road or not constructing a road becomes irrelevant. That is a matter to be dealt with by the Defence Ministry and the people who deal with defence matters.

मैं तो सिर्फ यह विनती कर रहा था कि सड़क बनाने का जो प्रोग्राम हम ने व्यवस्थित ढंग से शुरू किया, ...

श्री हुकम चन्द कछवाय : उपाध्यक्ष महोदय, मैं ने चैलेंज किया है कि सदन में गणपूर्ति नहीं है।

उपाध्यक्ष महोदय : घंटी बजाई जा रही है—अब कोरम हो गया है।

श्री राज बहादुर : मैं अधिक समय नहीं लूंगा। मैं सदन को इतना विश्वास दिलाता हूं कि यहां पर सड़क बनाने का एक काफी विस्तृत और पर्याप्त प्रोग्राम ले लिया गया है और वह चालू है, जिस को राज्य सरकारें और केन्द्रीय सरकार दोनों मिल कर पूरा कर रही हैं। कुछ काम पूरा हुआ है।

माननीय सदस्य, श्री सामन्त, ने इस बारे में एक प्रश्न किया है। राज्य सरकारों को 1964–65 में एक लाख रुपये की धनराशि और 1965–66 में एक लाख रुपये की धनराशि दी गई। 1964–65 में सेंटर की ओर से कोई विस्तृत प्रोग्राम नहीं था, राज्य सरकारों की ओर से कच्छ, गुजरात, राजस्थान की सीमा पर प्रोग्राम था, जिस को उन्होंने चलाया और अगर वह न होता, तो यह निश्चित बात है कि हम जोधपुर से जैसलमेर तक नहीं जा सकते थे। जोधपुर से पोकरन तक सड़क थी। अब जैसलमेर तक सड़क है जैसलमेर से बाड़मेर तक सड़क है। मैं स्वयं उस सड़क पर गया हूं, जो हमारे प्रोग्राम के अन्तर्गत नहीं आती थी। एक जगह शिव है। शिव से गदरा रोड तक सड़क है, जहां से हमारी सेनायें बढ़ कर पाकिस्तान की सीमा में दाखिल हुई हैं, गदरा सिटी पर कब्जा किया है और ढाली पर पहुंची हैं।

इस प्रकार हम कह सकते है कि जिन सड़कों की तुरन्त आवश्यकता थी, वे हमें मिल गई है। आगे जिन सड़कों की आवश्यकता है वे बनाई जा रही है। वे सड़कें कहां कहां हो कर जायेंगी, कितने मील लम्बी होंगी, कितना उन पर खर्च होगा, मैं आप से विनती करूंगा कि ये बातें न मुझ से पूछी जायें और न मुझे बतानी चाहिये। यह ऐसी सूचना है, जो हमारे लिये उपयोगी हो सकती है, लेकिन साथ साथ हमारे दुश्मनों के लिए भी उपयोगी हो सकती है। इसलिये मैं उस ब्योरे में नहीं

[श्री राज बहादुर]

जाऊंगा । मैं इतना अवश्य कह सकता हूं कि जो समय और धनराशि की सीमा निर्धारित की गई है, उस के अन्तर्गत हम तेजी से काम कर रहे हैं और इस को अवश्य पूरा करेंगे । किन्तु रेगिस्तान में ये सड़कें बनाना आसान नहीं होता है, क्योंकि जैसा कि माननीय सदस्य ने वहां पर स्वयं देखा होगा, भूमि बहुत रेतीली है और जिस प्रकार से अस्थिर राजनीतिक पार्टियां अपने चोले बदलती रहती हैं, जिस प्रकार से अस्थिर राजनीतिक व्यक्ति और तत्व एक पार्टी से दूसरी पार्टी में फलांग मार कर चले जाते हैं, उसी प्रकार से यहां रेत के टीले भी एक जगह से दूसरी जगह चले जाते हैं । जहां आज सड़क है, वहां कल रेत का टीला बन जाता है और वह सड़क गायब हो जाती है । इस लिए एक बड़े वैज्ञानिक ढंग से उन सड़कों को बनाना पड़ता है । मैं विनती करूंगा कि इस कठिनाई को ध्यान में रखें और कुछ इस प्रकृति की पाठशाला से भी लाभ उठाने और इस बात का यत्न करें कि जैसे वह सड़कों का स्थायित्व चाहते हैं, वैसे ही राजनीति में भी स्थायित्व आये ।

डा० राम मनोहर लोहिया : जैसे दलों को ललचाया करते हो, वैसे जरा बालू को भी ललचाते ।

श्री राज बहादुर : जिस दल में बल नहीं है, वह हवा के झकझोरों से इधर-उधर उड़ जाता है । इस को हम क्या कर सकते हैं ?

डा० राम मनोहर लोहिया : जैसे चुनाव में उड़ गए, वैसे ही सड़कें भी उड़ गयीं ।

श्री राज बहादुर : अगर दल में फौलाद की सी ताकत हो, तो वह एक आंधी नहीं, चुनाव की तीन तीन आंधियों को पार कर के आगे जा सकता है और चौथी का भी मुकाबला कर सकता है ।

एक माननीय सदस्य : वह दल में नहीं दलदल में हैं ।

श्री राज बहादुर : दल और दलदल में फर्क होता है ।

डा० राम मनोहर लोहिया : बिल्कुल सही कहा है । जिस दलदल में फंसे हो, उस में दल को नहीं देख सकते हो ।

श्री राज बहादुर : माननीय सदस्य ने कहा है कि कुछ लोग हैं, मंत्री हैं, जो चाहते हैं कि तस्कर व्यापार चलता रहे, इसलिये वे नहीं चाहते कि सड़क बनें । मैं स्वीकार करता हूं कि मुझे तस्कर व्यापार का बिल्कुल अनुभव नहीं है । अगर माननीय सदस्य को अनुभव है तो सदन उस से लाभ उठाना चाहेगा । मैं इस से अधिक कुछ नहीं कह सकता हूं ।

डा० राम मनोहर लोहिया : मुझे तस्कर व्यापार का बहुत अनुभव है । इसी लिए तो मुझ को पाकिस्तान ले जाने वाले लोग मिले थे । मैं जानता हूं कि इन लोगों में कौन-कौन तस्कर व्यापार करते हैं ।

श्री राज बहादुर : माननीय सदस्य, श्री भट्टाचार्य, को मैं आश्वासन के रूप में कहना चाहता हूं कि त्रिपुरा, मणिपुर, आसाम और वैस्ट बंगाल से ले कर हमारे सारे उत्तरी खंड और उत्तरी सीमाओं तक और जम्मू-काश्मीर से नीचे पंजाब राजस्थान, और गुजरात तक जिन बार्डर रोड्ज की आवश्यकता है, उन की पूरी व्यवस्था की जा रही है । इस प्रोग्राम में हम ने काफी सफलता प्राप्त की है ।

इस अवसर पर मैं अपने उन सैकड़ों मजदूर भाइयों और इंजीनियरों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं, जिन्होंने हिमालय पर्वत में सड़कें बनाने में अपने प्राण दिये हैं, क्योंकि सैकड़ों की जानें गई हैं, तभी वे सड़कें बनी हैं । मैं निश्चय के साथ कह सकता हूं कि सदन इस बात का विश्वास रखे कि हमारी सुरक्षा के लिए और हमारे आर्थिक

विकास के लिए जितनी भी सड़कों की आवश्यकता है, उन की व्यवस्था की जा रही है और यह कार्यक्रम पूरा किया जायेगा ।

माननीय सदस्य ने मधबापुर सड़क के बारे में कहा है । इन से बातचीत करने के बाद आज सुबह से मैं ने इस की छानबीन करने की कोशिश की है, लेकिन मैं किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाया हूं, क्योंकि इस के बारे में आवश्यक जानकारी उपलब्ध नहीं है । कुछ नाम की भी गड़बड़ी मालूम होती है, लेकिन मैं नाम के सवाल में नहीं जा रहा हूं मैं बाद में व्यक्तिगत रूप से उन को सूचना दूंगा ।

मुझे यही विनती करना है ।

डा० राम मनोहर लोहिया : वह सूचना सदन में ही दे दी जाये ।

17·29 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Thursday, December 2, 1965/Agrahayana 11, 1887 (Saka).

GMGIPND—LSII—2043 (Ai) LSD— 31-12-65—970.